

दरबार-खास है ये-बैठे मेरे हुजूर
कुद् दर्द साथ लाया-सुन गौर से जरूर
सुन गौर से जरूर

किसको सुनाये दास्ताँ-वहाँ मौत चल पड़ी
तुमने भुलाया यार को-रोके मचल पड़ी
रोके मचल पड़ी-रोके मचल पड़ी
बैठो करीब आओ-किस शान में मगरूर

कुद् दर्द साथ-....

दरबार खास-....

खुद बैठ गया कब्र में-इक आस के लिये
जो थे जिगर के लुकड़े-मेरी साँस के लिये
मेरी साँस के लिये-मेरी साँस के लिये
देखा है रौब तेरा-देखा तेरा शरूर

कुद् दर्द साथ-....

दरबार खास-....

आया नहीं हूँ दर-ये. गमे गीत सुनाने
 बैठा नहीं हूँ सामने, गमे गीत सुनाने
 गुस्ताखी हुई इतनी-चला अपना बनाने
 चला अपना बनाने-चला अपना बनाने
 फिर भी- मलाल दे-दो मुझे
 फिर भी- जलाल दे-दो मुझे-अब दोड़ दो गुस्से
 कुद्व दर्द साथ.....
 दरबार खास.....

लो- अलविदा "श्री बाबा श्री" की, न दिल को दुखाना
 देता कसम मैं- तुमको- आँसू न बहाना
 आँसू न बहाना- आँसू न बहाना
 हँस लो मेरे हालात पे- चल रेवा बहुत दूर
 कुद्व दर्द साथ.....
 दरबार खास.....